एक दशक का हिसाब किताब!

रोज़गार

रिपोर्ट कार्ड 2014-24

लोकतंत्र का सार यह है कि हम सरकारों को उनके दावों और वादों के हिसाब से जवाबदेह ठहराएं। लेकिन हाल के वर्षों में सबसे ज़्यादा क्षति जवाबदेही के विचार को पहुंची है। मीडिया में विभाजनकारी और अंधराष्ट्रवादी अतिशयोक्ति सामूहिक भूलने की बीमारी को बढ़ावा देती है। यह रिपोर्ट कार्ड (हालांकि निर्णायक नहीं है) वित्तीय जवाबदेही नेटवर्क इंडिया की एक श्रृंखला का हिस्सा है, जो वित्तीय और आर्थिक दृष्टिकोण से विभिन्न क्षेत्रों में सरकार के प्रदर्शन के कुछ दावों और वास्तविकता पर नज़र डालने और उजागर करने का प्रयास है ।

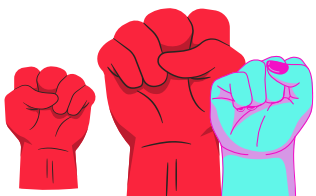

फाइनेंशियल एकाउंटेबिलिटी नेटवर्क इंडिया - फैन इंडिया

दावा

1

भाजपा सरकार ने 2014 में सत्ता में आने पर हर साल 2 करोड़ नई नौकरियाँ देने का वादा किया था। अगर इस वादे को साकार किया गया होता तो मार्च 2024 तक 20 करोड़ नई नौकरियाँ मिल जानी चाहिए थीं।

2

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा है कि उनकी सरकार ने अपने 10 वर्षों में पिछली सरकार की समान अवधि की तुलना में 1.5 गुना अधिक नौकरियां दी हैं।

3

स्किल इंडिया को 2015 में नई राष्ट्रीय कौशल नीति के हिस्से के रूप में प्रदर्शित किया गया था। इसमें 2022 तक 40 करोड़ श्रमिकों को कुशल बनाने का लक्ष्य रखा गया था।

4

सत्ता संभालने पर भाजपा सरकार का वादा था: **विनिर्माण क्षेत्र** में रोजगार की हिस्सेदारी को **100 मिलियन** तक बढ़ाना और सकल घरेलू उत्पाद में इसके योगदान की हिस्सेदारी को 17% से बढ़ा कर 25% करना।

5

“हम **महिलाओं** को राष्ट्र की प्रगति और समृद्धि में समान भागीदार और समान लाभार्थी बनाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। हम अगले 5 वर्षों में महिला कार्यबल भागीदारी में नाटकीय रूप से वृद्धि पर ध्यान केंद्रित करते हुए एक व्यापक 'कार्यबल में महिलाएं' रोडमैप तैयार करेंगे। हम महिलाओं के लिए रोजगार के बेहतर अवसर पैदा करने के लिए उद्योगों और कॉरपोरेट्स को भी प्रोत्साहित करेंगे।"

6

कांग्रेस के नेतृत्व वाली यूपीए सरकार ने देश को 10 साल तक रोजगार विहीन विकास के दौर से गुजारा है। व्यापक आर्थिक पुनरुद्धार के तहत, भाजपा **रोजगार सृजन** और उद्यमिता के अवसरों को उच्च प्राथमिकता देगी

7

निर्मला सीतारमण ने 2024 में अपने अंतरिम बजट के बाद कहा था कि “अब, कोविड के बाद से, उनमें से कई जो शहरी क्षेत्रों में थे और कुछ प्रकार के कौशल हासिल किए थे..कह रहे हैं कि ग्रामीण क्षेत्र उन्हें [समान] **अवसर** दे रहे हैं।” अपने कौशल का उपयोग करें और उसका मुद्रीकरण करें।उनमें से कई तो (शहरी केंद्रों में) वापस भी नहीं लौटे हैं।”

8

महिला श्रम बल भागीदारी दर में यह महत्वपूर्ण उछाल उनके दीर्घकालिक **सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक विकास** के उद्देश्य से नीतिगत पहलों के माध्यम से महिला सशक्तीकरण सुनिश्चित करने के लिए सरकार द्वारा निर्धारित निर्णायक एजेंडे का परिणाम है।

वास्तविकता

2012 में खुली बेरोजगारी बमुश्किल 2.1% थी। 2018 में यह पहले ही लगभग तीन गुना होकर 6.1% हो गई थी, जो भारत के श्रम बल सर्वेक्षणों के 45 वर्षों में सबसे अधिक दर है।

सीएमआईई संस्था के अनुसार भारत का कार्यबल पिछले 5 वर्षों में लगभग 400 मिलियन से थोड़ा अधिक पर स्थिर रहा है, जिसका अर्थ है कि रोजगार में बिल्कुल भी वृद्धि नहीं हुई है। सीएमआईई, जिसने मार्च 2016 में एक रोजगार सर्वेक्षण शुरू किया था, दिखाता है कि भारत में बेरोजगारी दर दिसंबर 2018 में श्रम बल का **6.64%** थी। 2019 में यह **5.27%** थी जो 2020 में बढ़कर **8%** हो गई, और **5.98%** और **7.33 %** पर बनी रही।क्रमश: अगले 2 वर्षों में और 2023 में यह और भी बढ़ गया (लगभग **8.1%**)।

2023 अक्टूबर में बेरोजगारों की संख्या **42 मिलियन** थी, जो कार्यबल का 10% है। काम की तलाश कर रहे कम से कम हर साल 80 लाख युवाओं का नियमित प्रवाह जुड़ जाता है (और यह हर साल बढ़ता रहता है), क्योंकि कामकाजी उम्र की आबादी का हिस्सा तेजी से बढ़ रहा है।

2016 के बाद से **विनिर्माण क्षेत्र** सिकुड़ना शुरू हुआ और अगले चार वर्षों में सकल घरेलू उत्पाद के **13% के सर्वकालिक निचले स्तर** पर आ गया। यह भी अभी-अभी पूर्व-कोविड स्तर (17%) तक ही पहुंचा है। कुल रोजगार में विनिर्माण क्षेत्र में रोजगार की हिस्सेदारी 2012 में 12.8% से गिर कर 2018 में 11.5% हो गई (जो बांग्लादेश के 16% से काफी कम है)। आख़िरकार यह 2022 तक 2012 के स्तर को पकड़ने में कामयाब हो गया है। इसे ही खोया हुआ दशक कहा जा रहा है।

भारत में कड़े और अचानक लगाए गए कोविड-19 लॉकडाउन के बाद, ऑक्सफोर्ड के एक अध्ययन के अनुसार, अप्रैल 2020 और जून 2023 के बीच लाखों श्रमिकों को घर वापस पलायन करने के लिए मजबूर होना पड़ा, जिसमें **6 करोड़** से अधिक श्रमिक कृषि में शामिल हो गए।

2023 में कृषि में अल्प-रोज़गार श्रमिक, कार्यबल का **46%** थे और भारत के सकल घरेलू उत्पाद में उनका योगदान केवल 15% था। वित्त मंत्री का यह दावा कि वे अपने कौशल का उपयोग और मुद्रीकरण कर रहे हैं, कुछ ठीक नहीं लगता है।

जहां अप्रैल 2021 से मार्च 2023 तक ग्रामीण भारत में निर्माण श्रमिकों और कृषि श्रमिकों की मजदूरी में क्रमश: केवल **10.5%** और **12%** की वृद्धि हुई है, वहीं अनाज की लागत में **22%** की भारी वृद्धि हुई है।

वर्षों तक गिरने के बाद, **महिलाओं की कार्यबल** भागीदारी दर बढ़ रही है, लेकिन सही कारणों से नहीं। 2019 के बाद स्वरोजगार में संकट की परिस्थिति के कारण वृद्धि हुई है। कोविड से पहले, **50% महिलाएँ स्वनियोजित** यानी सेल्फिम्प्लॉइड थीं। कोविड के बाद यह बढ़कर **60%** हो गया। साथ ही इस अवधि में स्वनियोजित से होने वाली आय में भी वास्तविक रूप से गिरावट आई है। भारत में वित्त और अर्थव्यवस्था पर सम्मेलन में अर्थशास्त्रियों ने चर्चा की कि कैसे **50%** से अधिक महिलाएँ स्वनियोजित हैं, जिनमें से आधी अवैतनिक पारिवारिक कार्यों या पारिवारिक खेतों में काम करने में नियोजित हैं। अधिकांश संकट प्रेरित अवैतनिक नौकरियाँ हैं जो सशक्तिकरण का निर्माण नहीं करती हैं।

Women largely entered self-employment and moved away from wage work, reducing earnings from self-employment

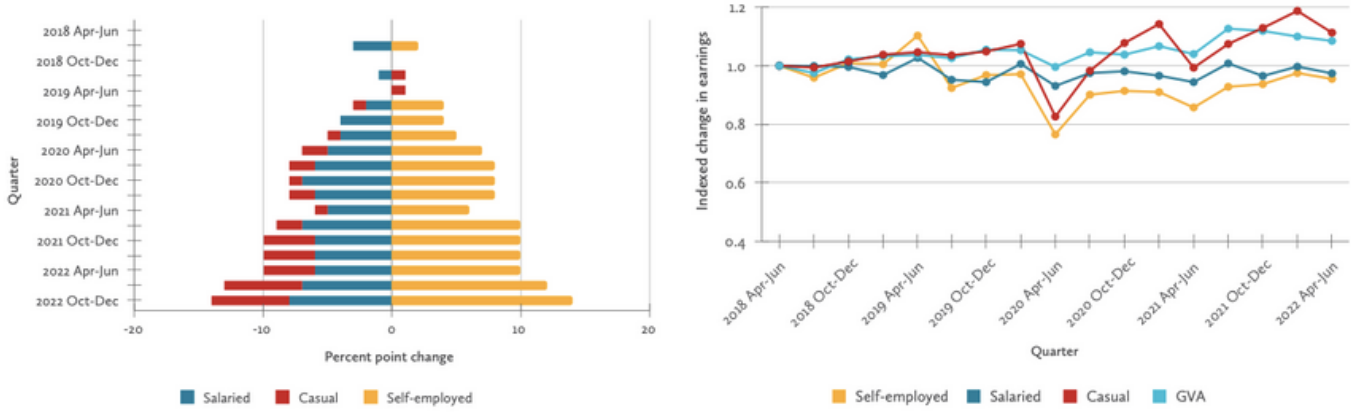

Sources and notes: PLFS, various rounds. These are Figures 2.6 and 2.8 in the report.

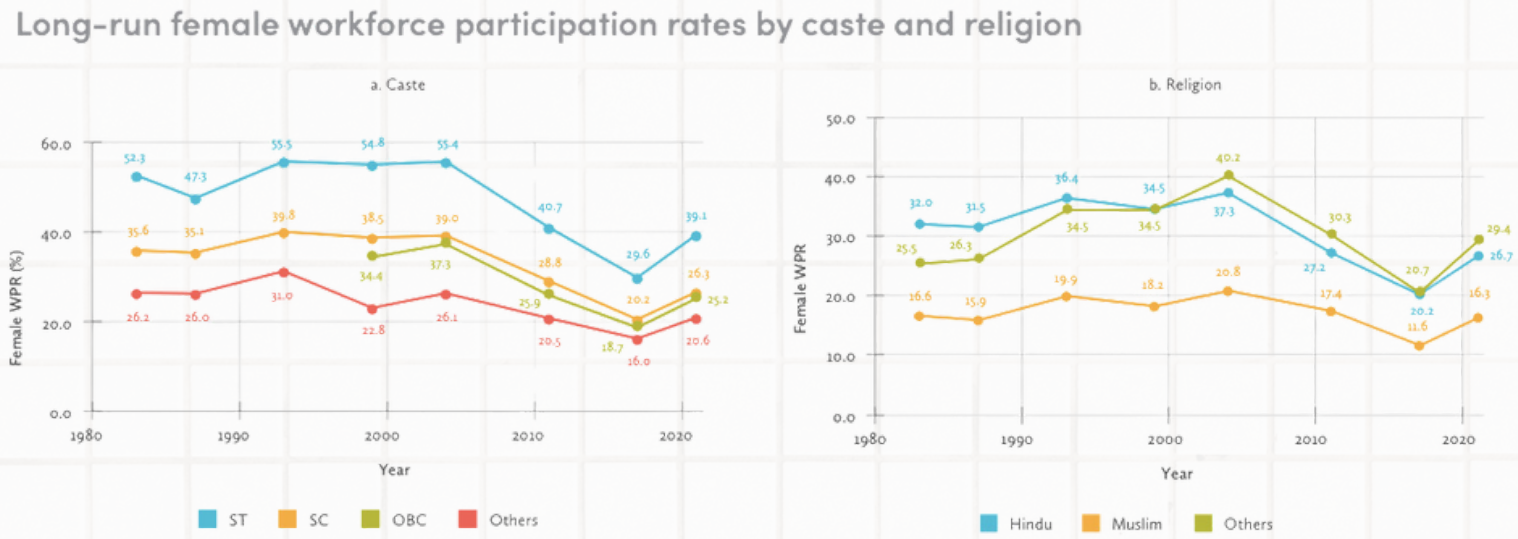

Long-run female workforce participation rates by caste and religion

Sources and notes: NSS EUS and PLFS various rounds. This is Figure 4.1 in the report.

भारत में कार्य की स्थिति रिपोर्ट 2023 में पाया गया है कि **सबसे छोटी फर्म के आकार में भी, एससी और एसटी मालिकों का प्रतिनिधित्व** समग्र कार्यबल में उनकी हिस्सेदारी की तुलना में कम है। 20 से अधिक श्रमिकों को रोजगार देने वाली फर्मों में उनका प्रतिनिधित्व बमुश्किल है और फर्म के आकार के साथ उच्च जाति का अधिक प्रतिनिधित्व बढ़ जाता है।

कोविड के दौरान, स्व-रोज़गार वाले लोगों में **मुसलमानों** को असमान रूप से नुकसान उठाना पड़ा। उदाहरण के लिए, ग्रामीण क्षेत्रों में अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति, मुसलमानों और अन्य (गैर-अनुसूचित जनजाति/अनुसूचित जनजाति और गैर-मुस्लिम) लोगों में बिना काम वाले व्यक्तियों का **प्रतिशत 6.9%, 8.6% और 5.5% से क्रमशः 15.1%, 27.5% और 13.7% बढ़ गया** है।

सीएमआईई के अक्टूबर 2023 के आंकड़े बताते हैं कि छोटी दुकानों में 1.03 करोड़ **दिहाड़ी मजदूर कम** हो गए हैं. वेतनभोगी कर्मचारियों की संख्या में भी **46 लाख की कमी** आई है. इसके अतिरिक्त, खेतिहर मजदूरों की संख्या में भी कोई उल्लेखनीय वृद्धि नहीं हुई है।

मोदी सरकार के **चार श्रम कोड**, जो 29 श्रम कानूनों की जगह लेंगे, भारत में श्रमिकों के कड़ी मेहनत से अर्जित अधिकारों और सुरक्षा के बचे हुए हिस्से को भी छीनने का बेशर्म प्रयास हैं।

हाइलाइट्स

2019 की तुलना में, 2023 में सकल घरेलू उत्पाद में लगभग 16% की वृद्धि हुई है (2023 के लिए 6% की वृद्धि दरमान कर); इसके बावजूद, रोजगार में वृद्धि नहीं हुई है, जो विकास प्रक्रिया की धीमी गति के बजाय इसकी प्रकृति के बारे में बहुत कुछ कहता है। वास्तव में, भारतीय अनुभव से पता चलता है कि यह प्रस्ताव - बेरोजगारी को केवल विकासदर में तेजी लाने से ही दूर किया जा सकता है, पूरी तरह से अमान्य है; यह सब इस बात पर निर्भर करता है कि विकास कैसे लाया जाता है।

पि**छले दशक में संविदात्मक रोजगार में वृद्धि के साथ केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों (सीपीएसई) में रोजगार में कमी आई है**। कर्मचारियों की कुल संख्या मार्च 2013 में **17.3 लाख से गिरकर मार्च 2022 में 14.6 लाख** हो गई है। यह मोदी सरकार में एक दशक में लगभग **2.7 लाख रोजगार की कमी** को दर्शाता है। जबकि इन सीपीएसई में कार्यरत कुल कर्मचारियों में से संविदा श्रेणी के तहत कर्मचारियों की कुल संख्या 2013 में **19%** से बढ़कर 2022 में 42.5% हो गई है और संविदाकरण आरक्षण को छीन लेता है।

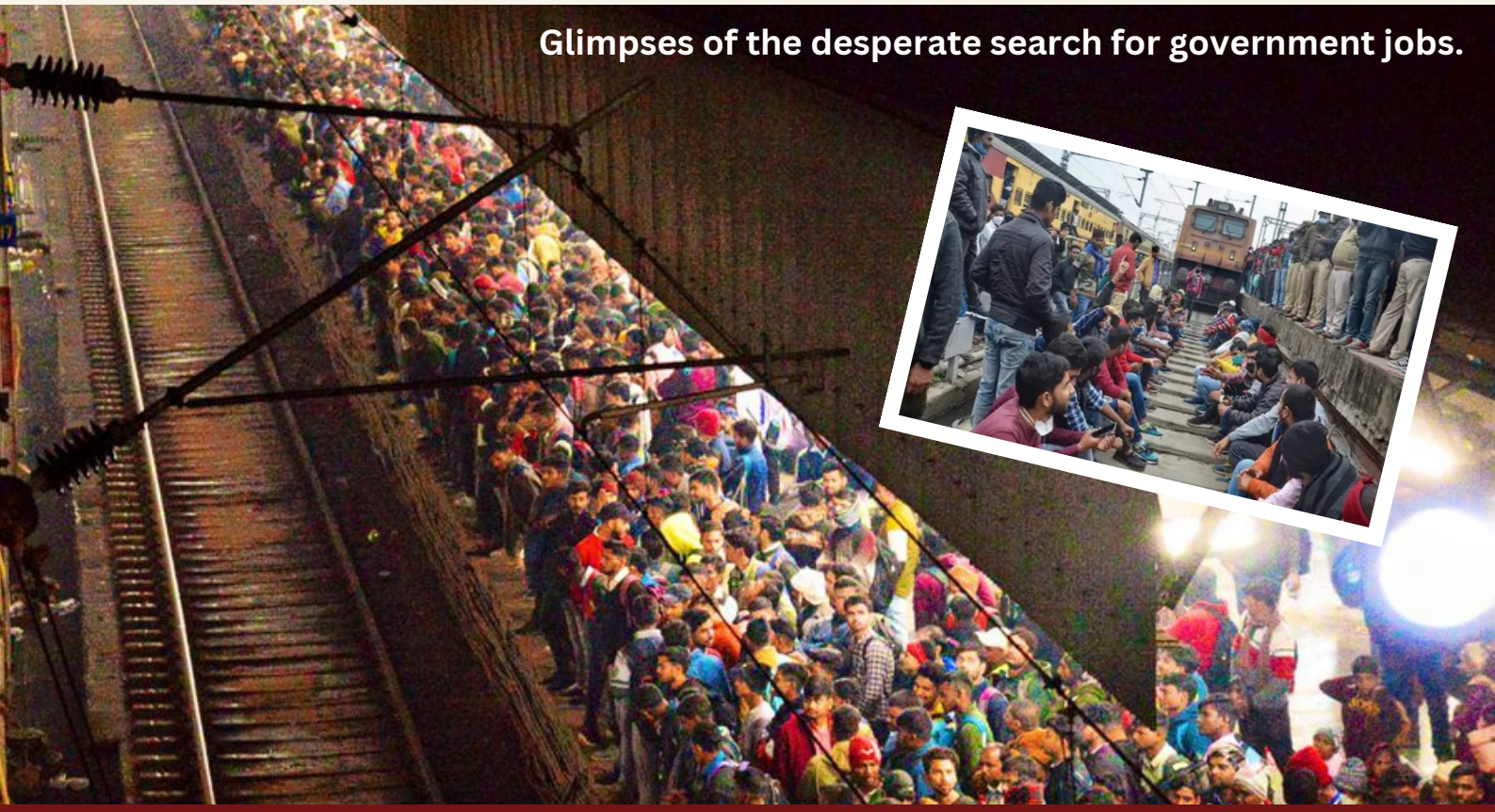

लुप्त होती रिक्तियाँ: देश में प्रमुख नौकरी रिक्तियों में पिछले दशक के दौरान रोजगार के अवसरों में भारी गिरावट आई है। **कर्मचारी चयन आयोग के तहत कुल नौकरी रिक्तियां 2014 में 80,650 से गिरकर 2023 में 36,348 हो गई हैं**। इसके तहत स्नातक स्तर की रिक्तियां 15,549 से गिरकर 8,440 हो गई हैं, और इस अवधि के दौरान अर्धसैनिक बलों में माध्यमिक स्तर की नौकरियां 62,390 से गिरकर 26,146 हो गई हैं, 2014 से 2023 तक. इस अवधि के दौरान यूपीएससी द्वारा आयोजित परीक्षाओं के तहत प्रमुख नौकरी रिक्तियां भी 1,873 से घटकर 1446 हो गई हैं। इसके तहत इस अवधि के दौरान सिविल सेवाओं के तहत रिक्तियां 1364 से गिर कर 1105 हो गई हैं और रक्षा बलों के तहत रिक्तियां 509 से गिर कर 341 हो गई हैं।

2014 में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में कर्मचारियों की संख्या **8,44,445** थी, जबकि विदेशी बैंकों सहित निजी बैंकों में कर्मचारियों की संख्या केवल **3,35,615** थी। 2023 में सार्वजनिक क्षेत्र के **बैंकों में कर्मचारियों की संख्या घटकर 7,56,644** हो गई है, जबकि निजी बैंकों में यह बढ़कर 7,45,612 हो गई है, और हमें याद रखना चाहिए कि आरक्षण निजी क्षेत्र पर लागू नहीं होता है।

2022 में बैंक मित्रों या व्यवसाय संवाददाताओं की संख्या **35,13,777** थी जो बैंक कर्मचारियों की तुलना में चार गुना से अधिक थी। यदि इन नौकरियों को नियमित कर दिया जाता, तो इससे अच्छी नौकरियाँ पैदा हो सकती थीं और हाशिए पर रहने वाले लोगों के लिए आरक्षण भी हो सकता था।

सरकारी और सार्वजनिक क्षेत्र में रोज़गार भारत में सबसे कम में से एक है। आईएलओ के आंकड़ों के अनुसार यह लगभग **3.8%** है जबकि अर्जेंटीना में यह **16.9%**, ब्राज़ील में **12.3%**, चीन में **28%**, अमेरिका में **13.3%**, यूके में **21.5%**, रूस में **40.6%** और क्यूबा में **77%** है।

अन्य रिपोर्ट कार्ड के लिए नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें या ऊपर दिए गए क्यूआर कोड को स्कैन करें:
https://bit.ly/BSofadecade

https://www.fanindia.net Financial Accountability Network
@_FANIndia Financial Accountability Network India - FAN India fanindia.info@gmail.com